तुम्हें ढूढ़ें कहाँ गोपाल

तुम्हें ढूढ़े कहाँ गोपाल,
तुम तो खोये कुंज गलिन में...

पांव में पायल के स्वर,
न मुरली की ताने,
न गोपी हैं न ग्वाल,
तुम तो खोये कुंज गलिन में....

न कोयल की कूक सुनावे,
न झरनों का झर झर,
न दीखे कदम की डाल,
तुम तो खोये कुंज गलिन में....

न यमुना तट न वंशी वट,
न गोकुल का दीखे पनघट,
न कोई तलैया ताल,
तुम तो खोये कुंज गलिन में...

न राधा न ललिता दीखे,
न माखन की मटकी,
न"राजेन्द्र"नंद का लाल,
तुम तो खोये कुंज गलिन में....

गीतकार /गायक-राजेन्द्र प्रसाद सोनी

https://www.bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/27275/title/tumhe-dhunde-kahan-gopal

अपने Android मोबाइल पर BhajanGanga App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |